प्राचीन भारतीय वाड़्मय में वर्णित राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन का स्वरूप

चन्द्र सोहन सिंह
शोध छात्र (मगध विश्वविद्यालयए बोध गया)
एम ए, एम एड, नेट

Received: Feb. 28, 2018 Accepted: April 01, 2018

भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों और संस्थाओं का विकास अति प्राचीन काल में ही सुकरात एवं प्लेटो से बहुत पूर्व हो चुका था। देववाणी नाम से विश्रुत संस्कृत– वाड़्मय में सामाजिक–राजनीतिक विचारों को प्रतिपादन और राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन का समुन्नत स्वरूप उस समय प्रस्तुत किया गया, जब यूनान में नगर–राज्यों के रूप में प्रजातंत्र के प्रारम्भिक परीक्षण चल रहे थे।

प्राचीन काल से ही यह रंगरथ परम्परा स्थापित रही है कि विचारक एवं आचार्य समाज की सुदृढ़ व्यवस्था हेतु विचार प्रस्तुत करते थे तथा राजा उन विचारों को कार्यरूप में परिणत करते थे। प्राचीन भारत में राजनैतिक व्यवस्था क्रमशः विकास को प्राप्त हुई। यह क्रमिक विकास क्रमशः वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, सूत्र काल, महाकाव्य काल आदि से होता हुआ वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुआ। प्राचीन भारत में नृपतंत्र, गणतंत्र, प्रजातंत्र आदि शासन–प्रणालियां प्रचलित थी और विशिष्टता यह थी कि नृपतंत्र, प्रजातंत्र में परिणत हो सकता था। राजनैतिक संगढन एवं लोक प्रशासन प्राचीन भारत में कई चरणों में विकसित हुई। प्रथम चरण में ऋग्वेद के अनुसार समाज पितृ प्रधान था और इसलिए राष्ट्र की सरकार राजतंत्रात्मक थी दूसरे चरण में बड़े–बड़े राज्य कायम हुए। वे धर्म के आधीन रहकर अपना कार्य संचालित करते थे। तीसरे चरण में राजपद धर्म के प्रभुत्व से बाहर आया। चौथे चरण में बड़े–बड़े साम्राज्य स्थापित होने लगे (ईशा से चार सौ वर्ष पूर्व) और विकास के अग्रिम चरणों में राज्य का धर्म पर प्रभुत्व हो गया।

राज्योत्पत्ति के सिद्धात के अर्न्तगत दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत की परिकल्पना मूर्त रूप में आई जिसमें राज्य–व्यवस्था संबंधी राज्य के सात अंगो –स्वामी, अमात्य, जनपद, पुर या दुर्ग, कोष दण्ड (सेना अथवा बल) एवं मित्र का समन्वयन प्रस्तुत किया गया। इसमें प्रत्येक अंगों के गुणवगुण, कर्तव्य, प्रजा से संबध की विशद् व्याख्या प्रस्तुत की गई। राजनीतिक संगठन के अर्न्तगत राजा, राजा के सहायक अधिकारियों तथा लोक प्रशासन इकाईयों यथा सभा एवं समिति के कार्यों एवं उत्तरदायित्वों का निदेशन किया गया। प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था व राजनीतिक संगठन में प्रारम्भ से ही लोकतंत्रात्मक तत्वों की समकालीन प्राचीन भारत में राजतंत्र के अलावा एक अन्य शासन व्यवस्था अथवा राजनीतिक एवं गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली सम्बन्धी राजनीतिक विचारों का विकास दिखलाई पड़ता है। उन साम्राज्यों (राजतंत्र) में मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य उल्लेखनीय है, वही गणतंत्र में शाक्य, बुलि, कलाम, मल्ल, विदेह, लिच्छवी, विदेह, ज्ञातृक, कोलिय मग्ग आदि अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

प्राचीन भारत में राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन के आय के स्रोत के अन्तर्गत राज्य के सात अंगों में वर्णित एक कोष भी है। बिना कोष के राज्य का कोई अस्तित्व नहीं माना गया। विभिन्न कालों में राज्यों के आय के स्रोत मुख्य रूप से राज्य की उपज पर कर, शिल्पियों से कर, व्यापार– वाणिज्य पर कर, वन समाग्री पर कर दुर्गकर, सेतुकर, राष्ट्र कर आदि थे।

राजनीतिक संगठन के अन्तर्गत राज्य का क्षेत्रीय आधार पर विभाजन किया जाता था। इन्हे प्रांत कहते थे। प्रांत काफी बड़े होते थे, इसलिए प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से उन्हें कुछ प्रदेशों में विभाजित कर दिया जाता था। जिला अथवा विशव क्षेत्रीय विभाजन की अन्य इकाई थी। जिलों को प्रशासनिक सुविधाओं के लिए आगे अन्य भागों–तहसीलों या मण्डलों में विभाजित किया जाता था। ये मण्डल जिले और प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' के बीच प्रशासन की एक इकाई थी। ग्रामीण क्षेत्रों की प्रशासनिक इकाईयों के साथ–साथ लोकप्रिय संस्थायें या पंचायतें भी होती थी जिनको ग्राम शासन व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग माना जाता था।

नागरिक सेवा के अन्तर्गत प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों की श्रेणिया होती थी। प्रशासन के सफलतापूर्वक संचालन हेतु कई प्रशासनिक विभाग–राजमहल विभाग, सेना विभाग, परराष्ट्र विभाग, माल विभाग, कोष विभाग, उद्योग विभाग, खान विभाग, वाणिज्य विभाग, न्याय विभाग, पुलिस विभाग, धर्म विभाग आदि वर्गीकृत किये गये थे।

इस प्रकार प्राचीन भारत में सुस्पष्ट राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन की प्रकृति एवं स्वरूप का विकास कालक्रमानुसार विभिन्न रूपों में हुआ, जिसका समग्र एवं स्पष्ट रूप से अध्ययन समय की मांग है, कयोकि भारत का वर्तमान राजनीतिक संगठन एवं लोक प्रशासन को प्राचीन भारतीय परम्परा के अच्छे तत्वों से एकीकृत कर नया स्वारूप दिया जा सके।

सन्दर्भ–

1. ई जे रेपसन–कैम्ब्रीज–द यूनीवर्सिटी प्रेस, 1916–द कैम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इंडिया वोल्यूम–1
2. एच एल चटर्जी: इन्टरनेशनल एण्ड इन्टर रिलीजन इन एनशियेंट इंडिया।
3. एम पी बालकृष्ण राव कौटिल्य अर्थशास्त्र का सर्वेक्षण जो विश्वेश्वरया द्वारा अनुमोदित संस्करण, 1961
4. के पी जायशवाल–हिन्दी पॉलिटोः ए कन्स्टीट्यूशनल हिस्ट्री ऑफ इंडिया इन हिन्दुस्तान टाइम्स सेकेण्ड वोल्यूम इन कलकत्ता, व्यूटन बर्थ ऑफ कम्पनी, 1924
5. के वी रंगास्वामीः आयंगर सम ऑफ एन्शियेंट इंडियन पॉलिटी, मद्रास 1935
6. जे जे अंरिया– न नैचर एण्ड ग ऑफ पालिटीकल अब्लिगेशन इन द हिन्दु स्टेट लोगमनस, 1935
7. डी आर भंडारकर–लेक्चर ऑफ द एन्शियेंट हिस्ट्री ऑफ इडिया कलकत्ता, यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, 1919
8. मधुकर इमाम चतुर्वेदीः प्राचीन भारत में राजस्व व्यवस्था–विसद अध्ययन संस्थान, जयपुर, 1985
9. सत्यकेतु विद्यालंकार–प्राचोय भारत की शासन संस्थायें और राजनीतिक विचार, श्री सरस्वती सदन, मसूरी, उत्तर प्रदेश।